CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

32
सं. च. भाग
2-6 V.HP

* ओ३म् *

क्ति संग्रह भजनमाला

(चतुर्थ भाग)

रक्षक हिन्दू जाति का, भारत का सरताज।
गौकुल का पालक प्रबल, शेर शिवा महाराज ॥ —शान्तिदेवी

संग्रहकर्त्री और प्रकाशिका—

श्रीमती शान्तिदेवी आर्योपदेशिका

धर्मपत्नी—श्री ठाकुर सज्जनसिंह जी ज़िला मैनपुरी

वर्त्तमान स्थान—लुहारगली, आगरा।

*

मुद्रक—

सत्यव्रत शर्मा, शान्ति प्रेस, आगरा।

प्रथम बार १५००] संवत् १९८६ [मूल्य =) आना

सर्वाधिकार सुरक्षित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या..... प्राप्ति-संख्या.....

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम शांति संग्रह भजनमाला

लेखक .....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्ति संग्रह भजनमाला

चतुर्थ भाग

भारत माता की वन्दना १

मुकुट रूप में गिरवर तेरे सिर पर शोभा धारे।
वारिराज तेरे चरणों में सादर प्रेम पखारे॥
विन्ध्याचल कटि-भूषण तेरा गंग कंठ की माला।
छै ऋतु तेरी पूजा के हित फूल चुने भरि डाला॥
मलय चँवर लेकर हाथों में तुझ पर सदा डुलावे।
कमल सरीखो लंका तेरी शोभा खूब बढ़ावे॥
कोटि कोटि संतत ले गोदी प्रेम पयोद पिलावे।
भूखे दाना प्यासे पानी नंगे वसन दिलावे॥
हे भारत माता यश तेरा हम सब बहिनें गावें।
रूपराशि गुणखानि तुझे हम सादर शीश नवावें॥
मुकुट रूप में गिरवर तेरे सिर पर शोभा धारे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

...main. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वदेश प्रेम २

शैर

देशभक्त है वही देश हित जिसने तन मन वारा है।
रोम रोम से यह स्वर निकले भारतवर्ष हमारा है॥
निकल हिमालय से जो आई गंगा जी की धारा है।
लहर लहर से यह स्वर निकले भारतवर्ष हमारा है॥
परवत की घाटी घाटी से बहता झरना प्यारा है।
झर झर झर से यह स्वर निकले भारतवर्ष हमारा है॥
आसमान में जब बादल का छुटता जल फव्वारा है।
बूंद बूंद से यह स्वर निकले भारतवर्ष हमारा है॥
दोहा—तन में तेरी गूंज हो, मन में तेरी तान।
धन को तेरी धूल पर, वारूँ हिन्दुस्तान॥

भजन ३

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान, जगत से न्यारा हिन्दुस्तान।
बड़ा दुलारा हिन्दुस्तान, उज्वल तारा हिन्दुस्तान॥टेक॥
जग में विद्या फैली सारी, तू है सब धन का भंडारी।
तेरे गुण गाते नर नारी, सब करते तेरा ही मान॥हमारा०॥
ऊँचे पर्वत की हरियाली, पके पके फल वाली डाली।
भौंरे की गुञ्जार निराली, कोयल की है मीठी तान॥हमारा०॥
सीता दमयन्ती सी नारी, कुन्ती विदुलासी महतारी।
ध्रुव से भक्त जहाँ तपधारी, जनमें जहाँ व्यास भगवान॥हमारा०॥
दुख में तेरा हाथ बटावें, सुख में तेरा मन बहलावें।
तेरी ही जय सदा मनावें, गावें तेरा ही सब गान॥हमारा०॥
जगत से न्यारा हिन्दुस्तान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

ग़ज़ल राष्ट्रीय ४

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं,
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥
इस उजड़े हुए गुलशने हिन्द को,
हम हरा और फूला फला चाहते हैं ॥
फक़त इस खता के सज़ावार हैं हम,
जो दर्दे वतन की दवा चाहते हैं ॥
जो ज़ालिम बुरा चाहता है हमारा,
हम उसका भी दिल से भला चाहते हैं ॥
घड़ा पाप का भर चुका गालिबन है।
ज़माने से ज़ालिम मिटा चाहते हैं ॥
वो जाके मिले ज़ुल्मों से मुसाफिर।
जो दो चार उल्टी सुना चाहते हैं ॥

भजन ५

हमें बल ऐसा दो भगवान।
अपनी जन्मभूमि का जग में नित्य बढ़ावें मान ॥
अपनी भाषा को भूषित कर फैलावें सतज्ञान।
और उसी में प्रति दिन गावें तेरा गौरव गान ॥१॥ हमें०
भेष स्वदेशी भाव स्वदेशी और स्वदेशी तान।
रंग स्वदेशी में रंग जावें हम भारत सन्तान ॥२॥ हमें०
दीन दुखी अपने भाई का रखें निरंतर ध्यान।
मरियादा को कभी न मेटें दृढ़ हो मेरु समान ॥३॥ हमें०
सदा एक स्वर से हम बोलें हिन्दी हिन्दुस्तान।
जय स्वदेश की गाते गाते होजावें बलिदान ॥४॥ हमें०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भजन ६

(आज कल की सन्तान)

चाचा दौड़ियोरे चुहिया काटने को आई ॥ टेक ॥
मक्खी के भुजदंड उखारें तोड़ें कच्चा सूत।
मुक्का मार बताशा फोड़ें ऐसे हैं रजपूत ॥१॥चाचा०
एक दिवस एक बिच्छू निकला जिसकी इंच लंबाई।
ज्यों दौड़ा बंदूक उठाकर पैर फिसल गयो भाई ॥२॥चाचा०
एक दिवस एक मेंढ़क निकला क्या बला यह आई।
भागत भागत घर में आया दुबका बीच रजाई ॥३॥चाचा०
खाता हूँ थोड़ा सा केवल खीर की एक कढ़ाई।
बिल्ली के जब दर्शन होजायें दिनभर होश न आई ॥४॥चाचा०

ग़ज़ल ७

नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते ॥ १ ॥
जान पर खेल ही जायेंगे अगर हम तो भी।
सैकड़ों कोही जिला जायेंगे मरते मरते ॥ २ ॥
रूह तन होंगे पर जुदा उनको तो होना ही है।
हमतो बिछड़ों को मिला जायँगे मरते मरते ॥ ३ ॥
वह कोई और है जो रोके रुला के मरता।
हम रक़ीबों को हँसा जायेंगे मरते मरते ॥ ४ ॥
ख़ाक में जिस्म किसी और का मिलता होगा।
हम तो भूखों को खिला जायेंगे मरते मरते ॥ ५ ॥
तिशना लब आयेंगे जिस वक्त रक़ीबे नादाँ।
ख़ून तक अपना पिला जायेंगे मरते मरते ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

भजन ८

(पुत्र को माता का उपदेश)

आज तू रण में जाके धूम मचादे बेटा।
ख़ौफ से दुश्मनों के दिल को हिलादे बेटा ॥ १ ॥
तीर पै तीर खाके पीठ दिखाना न कहीं।
जिस्म अपने को तू छलनीसा बनादे बेटा ॥ २ ॥
जिस तरह जंगलों में बिजली गिरा करती है।
फौज़ दुश्मन को तू ऐसा जला दे बेटा ॥ ३ ॥
अपने तीरों से तू मयदान में भरदे भरदे।
वास्ते स्वर्ग के तू साड़ी बनाले बेटा ॥ ४ ॥

ख्याल ६

बोला अभिमानी औरंगज़ेब अभिमान से चेहरा लाल हुआ।
जसवन्तसिंह जग में मेरा कैसा बुलन्द इक़बाल हुआ ॥
देखो यह जङ्गली शेर मेरे पिंजड़े में पड़ा पामाल हुआ।
कितने ही ऐसे शेरों का मेरे हाथों से काल हुआ ॥
मेरी ताक़त के आगे देखो सिंह आज शृगाल हुआ।
हरिदत्त कहें इतना सुन कर दरबार का रङ्ग निढाल हुआ ॥
दो०—लेकिन जसवन्तसिंह से, सहे गये नहीं बैन।
इकदम बोले गर्ज कर, रक्त वरण कर नैन ॥
आपके पिंजड़े में शेर बन्द है किन्तु—

भजन १०

हमारे घर में नित प्रति शेर बच्चों में खेला करते हैं।

कवित्त—बादशाह गुस्से से भौंहें कमान कर;
बोले अभी आपका ग़रूर हुआ चूर नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रस्सी तो जल चुकी बल अभी बाक़ी है;
इनका भी निशान मिटे समय कुछ दूर नहीं ॥
आपका शेर क्या इससे भी ज़बरदस्त;
जिसकी दहाड़ तेज सहता कोई शूर नहीं ।
कल अपने शेर को दरबार बीच हाज़िर करो;
दोनों लड़ें कुश्ती करो झूठा ग़रूर नहीं ॥
बोले जसवन्तसिंह दिलेर, देखे नहीं हमारे शेर ।
जिनके थप्पड़ से ही ढेर, ऐसे सिंह रोज़ मरते हैं ॥ १ ॥

(कवित्त) वायदा करता हूँ कल को दरबार बीच, अपने घर पाला हुआ शेर लेकर आऊँगा । कैसे पछाड़ता है लड़ाई में इस पामर को, अपने बबर शेर का जौहर दिखलाऊँगा ॥ झूठा ग़रूर जसवन्तसिंह करता नहीं, कहता हूँ निश्चय वही उससे कराऊँगा । आप अपने शेर को हर तरह तैयार रक्खें मैं अपने शेर को ज़रूर यहां लाऊँगा ॥

दूसरे रोज भरा दरबार; आकर बैठे सब सरदार ।
साथ ले पृथ्वीसिंह कुमार, क़दम जसवन्तसिंह धरते हैं ॥२॥

(कवित्त) औरंगज़ेब बोला अपना शेर क्यों लाये नहीं;
हमारे इस केहरी से किसको लड़ाओगे ।
बातों में कुलावे जमी आसमां के मिलाते हो;
अब कहो कुश्ती आज किससे कराओगे ॥
जसवन्तसिंह बोले आप अपना निकालें शेर;
मेरा सिंह मेरे पास बैठा हुआ पाओगे ।
इतने में पृथ्वीसिंह कूदा कटार तान;
जसवन्तसिंह बोले दाग़ कुल को लगाओगे ॥
निहत्थे पर लेकर हथियार; क्षत्री करते हैं नहीं वार ।
इसलिये रखदे यहीं कटार; क्षत्री क़ौल से नहीं टरते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

(कवित्त) फेंक कर कटार बाल पृथ्वीसिंह तैयार हुआ,
शेर निकल पिंजड़े से सामने को आया है।
लेकिन बड़ी फुर्ती से पृथ्वीसिंह बहादुर ने;
उसका वार रोक अपना जौहर दिखलाया है।
अगले दोनों पैर पकड़ चीर के बनाये दो;
जाकर अगार बादशाह के गिराया है।
छोटे बच्चे का ऐसा वीरत्व देख जय जय;
का नारा सरे दरबार ने लगाया है॥
कभी हम थे ऐसे बलवान, जिनके बल से जग भयमान।
आज हरिदत्त जने सन्तान, गलियों में पिटते फिरते हैं॥

चर्खा ११

भला चाहो तो चर्खा चलाती रहो।
हथिया न हाले पटेला न डोले,
बँधि बँधी पखुरियाँ सटाती रहो॥ भला०॥
गुड़ियों के गोड़े न खूंटे निगोड़े,
चोखी चमखँ चढ़ाती रहो॥ भला०॥
पोनी के तागे को तोड़े न तकुआ,
घिन्नी घनाघन घुमाती रहो॥ भला०॥
खद्दर के जोड़े स्वदेशी बना लो,
घर में कुलीना कहाती रहो॥ भला०॥

भजन १२

(बहिन का उपदेश भाई को)

विदेशी मत लैओ भ्राता हम को चीर।
तदपि स्वदेशी सुन्दर लागत, सोहत अधिक शरीर॥
जो धन जात पार सागर के, बहुरि न आवत तीर॥विदेशी०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन जावत औ धर्म नसत है, उठत कलेजे पीर ।
बहिन कहे हे भ्राता प्यारे, बनो देश दल-वीर ॥विदेशी०॥

प्यारा चर्खा १३

चर्खा लादे प्रीतम प्यारे तेरे जाऊँ मैं बलिहार ॥टेक॥
धढ़ी दो धढ़ी रुई मंगादे, अच्छी सी उसको धुनवादे ।
कूड़ा करकट किरी चुनादे, निकले बांका तार ॥१॥ चर्खा० ॥
सूत कात कर वस्त्र बनाऊँ, चादर कुरता कोट सिलाऊँ ।
मैं बहिनो तुमको पहिनाऊँ, हो स्वदेश उपकार ॥२॥ चर्खा० ॥
मानचेस्टर और लंकाशायर, चीख उठे जापानी ताज़िर ।
सह न सके चर्खे का फायर, करे पट्ट बाज़ार ॥३॥ चर्खा० ॥
चिकन और तनजेब डोरिया, मलमल खासा और बोरिया ।
भारत के गर बुनें कोरिया, हँस हँस करूं सिंगार ॥४॥ चर्खा० ॥
चर्खा चक्र सुदर्शन आला, करे दुशमनों को तहो वाला ।
जल्द निकालेगा दीवाला, सत्य कहूँ भरतार ॥५॥ चर्खा० ॥
भारत का यही जीवन है, तन मन धन इस पर अर्पण है ।
भारत की यह मशीनगन है, करे वार पर वार ॥६॥ चर्खा० ॥
तोप चले वे गोला गोली, गोलंदाज जुलाहे कोली ।
लंदन सब कर देंगे पोली, बड़ी विकट है मार ॥७॥ चर्खा० ॥
चर्खा सब आलस को खोवे, बदनामी के धब्बे धोवे ।
शर्म्मा जलेसरी अब होवे भारत का उद्धार ॥८ चर्खा० ॥

दादरा १४

मुझे देशी चुनरिया मँगा दे पिया ॥ टेक ॥
बारीक कपड़े में सब अंग दीखे,
मोटी दुसूती लादे पिया ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu

लट्ठे की चादर चूल्हे में झोको,
स्वदेशी लहरिया रंगा दे पिया ॥ २ ॥
गर्माय जाड़ों गर्मी में ठण्डा,
ऐसा सलूका बना दे पिया ॥ ३ ॥
चटकीले भड़कीले कपड़े न भावें,
अब इनमें अगिनी लगा दे पिया ॥ ४ ॥
खद्दर के बच्चों को कपड़े रंगा दो,
गोटा किनारी लगा दे पिया ॥ ५ ॥
लिवरपोल लंका शायर की,
चर्खे से हस्ती मिटा दो पिया ॥ ६ ॥
शर्मा कहे इस विधि से विदेशी,
सहज ही में घर से भगा दे पिया ॥ ७ ॥

बरना १५

बरना हमारा रंगीला री ज़रा देखो सही ॥ टेक ॥
सर पर मुकट कानन में कुण्डल झालर में मोती छबीला री।
ज़रा देखो सही ॥ १ ॥
खद्दर का केशरिया जामा बदन में पटुका रंगीला सजीला री।
ज़रा देखो सही ॥ २ ॥
देश प्रेम में गद्गद् हृदय शील सुमति में सुशीला री।
ज़रा देखो सही ॥ ३ ॥
मोहन मूरत साँवरी सूरत पुरुष का मान मथीला री।
ज़रा देखो सही ॥ ४ ॥
राज़ी रहे यह बना हमारा शर्म्मा का प्यारा हठीला री।
ज़रा देखो सही ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बरनी १६

बरनी को देशी चुनरिया जी तुम लाना ज़रूर।
देशी डुपट्टा देशी उढ़नियां देशी की लाना घंघरिया जी।
तुम लाना ज़रूर ॥ १ ॥
गोटा किनारी की झालर लगाना अच्छा रंगाना लहरिया जी।
तुम लाना ज़रूर ॥ २ ॥
जो कोई पहने विलायत के कपड़े है वह तो बिलकुल गवरियाजी।
तुम लाना ज़रूर ॥ ३ ॥
घर घर में प्रचार हो जब खदेशी सम्पति की बसे बदरियाजी।
तुम लाना ज़रूर ॥ ४ ॥
लिबरपौल लंका शायर के जर जर के होवे ज़िबरिया जी।
तुम लाना ज़रूर ॥ ५ ॥
फिर झगुली झगुलों को झाड़ भागे विदेशों के बन्दर बँदरियाजी।
तुम लाना ज़रूर ॥ ६ ॥
शर्मा जलेसरी पहिनाते हँस हँस के प्रेम मुदरिया जी।
तुम लाना ज़रूर ॥ ७ ॥

दादरा १७

डूबा जाता है भारत बचाओ ज़रा।

छूओ मंगाओ न लाओ विदेशी।
घर से भी बाहर निकालो ज़रा ॥ १ ॥
विदेशों के बारीक कपड़े न पहिनो।
बहनों तबियत को अब तो सम्हालो ज़रा ॥ २ ॥
खदेशी हो मज़बूत घर का बुना हो।
ख़रीदो तो देखो दिखा लो ज़रा ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu

जो भूल से पहनते हो विदेशी।
अब उनको चल कर समझादो ज़रा ॥ ४ ॥
भइया भतीजे जो देवे विदेशी।
तो उसको फेंको उछालो ज़रा ॥ ५ ॥
शर्म्मा जलेसरी कह भारत बहनो।
हित करके यश को कमा लो ज़रा ॥ ६ ॥

बधू का प्रतिउत्तर वर से १८

सरकार जी पूरी प्रीति निभाना मोरि जान।
सात वचन जो आपने और दीने हैं इस आन।
सरकार जी भूल न जाना मोरि जान ॥१॥
दासी मैं आपकी और आप हुए सरताज।
सरकार जी मोरि नय्या पार लगाना मोरि जान ॥२॥
एक बात मैं आप से और कहती हूँ हर बार।
सरकार दिल गैरों से मत उलझाना मोरि जान ॥३॥
बाबू की हो आप से जो बेजा गुफ़्तार।
सरकार जी माफ़ सभी करना मोरि जान ॥४॥

प्रति उत्तर वर का १९

दिल जान थारी सूरत पर मैं वारी मोरि जान।
चन्द्र वदन मृगलोचनी और सुन्दर रूप निधान।
दिल जानरी प्यारी चन्द्र उजारी मोरि जान ॥१॥
शीलवती विद्यावती और ज्ञानवती कुलवान।
दिल जान मधुरि बोली लागे प्यारी मोरि जान ॥२॥
हँसी बसी चित्त आपकी और मधुर मधुर मुसिकान।
दिल जान दिलवर दिल अफ़ज़ाँ दिलदारी मोरि जान ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखदाता दुखनाशनी और करना मेरा सनमान ।
दिल जान मुझ बुलबुल की बाग़ बहारी मोरि जान ॥४॥

वरनी २०

आली तुम्हारी वरनी तुम्हारी वरनी,
कैसी सरबोर आली तुम्हारी वरनी ॥ टेक ॥
सुन्दर सुभग मृगनैनी सुभग मृगनैनी,
चन्दा को सी कोर ॥१॥ आली तुम्हारी वरनी ॥
कैसी बढ़ै प्रीति विद्या बढ़ै प्रीति विद्या,
डोलत जिमि मोर ॥२॥ आली तुम्हारी वरनी ॥
वरनो तेरे गुण गावें तेरे गुण गावें,
कामिन चहुँ ओर ॥३॥ आली तुम्हारी वरनी ॥

वरना २१

जननी तुम्हारो वरना तुम्हारो वरना ।
कैसो होशियार जननी तुम्हारो वरना ॥
कैसी वेद की बाणी वेद की बाणी,
बोलत हर बार ॥ १ ॥ जननी तुम्हारो वरना ॥
पूरा रहा ब्रह्मचारी रहा ब्रह्मचारी,
करता उपकार ॥ २ ॥ जननी तुम्हारो वरना ॥
सब ही करे शुभ काजा करे शुभ काजा,
वैदिक अनुसार ॥ ३ ॥ जननो तुम्हारो वरना ॥
बाबू विमल अति सोहै विमल अति सोहै,
फूलन गले हार ॥ ४ ॥ जननो तुम्हरो वरना ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu

दादरा प्रवाना २२

(तर्ज–आली तुम्हारी बरनी कैसी सरबोर आली तुम्हारी बरनी)

बहु विधि जोनार दिल से जिमाओ इनको ॥ टेक ॥
हित से जिमाओ भोजन जियाओ भोजन।
निज करकर ब्यार दिल से जिमाओ इनको ॥ १ ॥
आदर सहित कर जोरी सहित कर जोरो ।
कीजै सत्कार दिल से जिमाओ इनको ॥ २ ॥
जैसी कहें ये समधी कहें ये समधी ।
सोई उरधार दिल से जिमाओ इनको ॥ ३ ॥
बाबू करो सब काजा करो सब काजा ।
वेदिक अनुसार दिल से जिमाओ इनको ॥ ४ ॥

अथ बिनती दादरा धुनि ठुमरी २३

(तर्ज—आवौ आवौ नगरिया हमारी जी)

इक बिनती सुनो तुम हमारी जी ॥ टेक ॥
दरशन जनाब हमने कि जब आपके पाए।
मारे खुशी के फूले बदन मैं न समाए ॥
देखी जिस दम सुरतियाँ तुम्हारी जी ॥१॥
हरतौर से ही आपतो पूरे अमीर हैं ।
हमतौ तुम्हारे सामने बिलकुल हकीर हैं ॥
देखो देखो ज़रा तो निहारी जी ॥ २ ॥
जो कुछ कसूर हमसे हुआ हो जनाब मन।
माफी करौ तमाम ही आला सहाब मन ॥
कीजै हर काम दिल को सम्हारी जी ।
दिलका गुबार जो कि है सब छोड़ दीजिये ।
किश्ती हमारी शर्म की अब पार कीजिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Main. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भला दीजे किनारे उतारा जी ।
हम आपके ज़िनहार कभी हैं न मुक़ाबिल ।
महाराज आज लाज रखौ होके शाददिल ।
होवे बातें दुतर्फ़ा विचारी जी ॥ ५ ॥
अपने मिज़ाज के ही बमूजिब तमाम काम ।
कीजे कि जिससे फ़ायदा होता रहे मुदाम ॥
कुछ हम कौन हैं उजरदारी जी ॥ ६ ॥
कुछ शिकवा शिकायत का नहीं है मुकामाये ।
खुद दिल में समझ लोजिये ऐ खुश कलाम ये ॥
हमैं बहतर है ख़िदमत गुज़ारी जी ॥७॥
मौजूद है बुरा भला सोपेश नज़र है ।
बाबू न किसी बात में कुछ हमको उज़र है ॥
जैसी चाहौ हमैं है गवारी जी ॥ ८ ॥

दिल्ली का समाचार २४

एक सेठ जी ७५ वर्ष की आयु में एक १४ वर्ष की लड़की से शादी करके आगे पुत्र की लालसा से हर एक हिन्दू मुसलमान, सियाने नौतों के पैरों पर सिर रगड़ने लगा । एक सफ़ेद डाढ़ी वाला मिल गया उसने पीर का गंडा तावीज और तजवीज बताई उसका वर्णन दो भजनों में सुनने के क़ाबिल है ।

सेठानी की प्रार्थना स्याने से ।

मेरे स्याने यह आस बँधा दो मुझे ।
पुत्र होने की बात बता दो मुझे ॥
रंजो ग़म में फँस रही देखो यह मेरी जान है ।
मालो ज़र ईमान यह सब आप पर कुरबान है ॥
मुखड़ा पुत्र का जल्दी दिखा दो मुझे ॥१॥ मेरे स्याने०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu

ज़िन्दगी बेकार है मेरी बिना सन्तान के।
आपही स्वामी हैं मेरे दीन के ईमान के॥
कोई गंडा तावीज़ बना दो मुझे ॥२॥ मेरे स्याने०
देख कर ख़ाली मकाँ को फटती छाती है मेरी।
अब बिना संतान के यह रूह भटकती है मेरी॥
गर्भ रहने का यतन बता दो मुझे ॥३॥ मेरे स्याने०
हाय भारतवर्ष की महिला बनी अज्ञान हैं।
शिक्षा पर गोपाल के देतीं न अब तो ध्यान हैं॥
कहतीं ग़ैरों से पुत्र दिला दो मुझे ॥४॥ मेरे स्याने०

जवाब स्याने का सेठानी से।

गंडा पीर का आज बनादूँ तुझे।
एक यत्न भी और बतादूँ तुझे॥
है बहुत दुश्वार तुझ से काम यह होना नहीं।
पड़ के इस जंजाल में तू जान को खोना नहीं॥
रस्ता साफ मैं देख दिखा दूं तुझे ॥ १ ॥गंडा०॥
तेरे कुनबे में अगर लड़का कोई नादान हो।
ख़ून से उसके तेरा गर जो कहीं स्नान हो॥
फिर तो महीने में गर्भ रखा दूं तुझे ॥२॥गंडा०॥
क़त्ल करने के समय दिल में न डर जाना कहीं।
पीर का पैग़ाम यह मत मन में घबराना कहीं॥
यही गुरु को इक बात बता दूं तुझे ॥३॥गंडा०॥
देखिये यह वीर बनते किस तरह बेपीर हैं।
ख़ून बच्चों के बहाने में बने बेपीर हैं॥
देखो गोपाल हाल सुनादे मुझे ॥४॥ गंडा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धि करो २५

शुद्धि करियो तो बेड़ा पार है।
इस शुद्धि से जय जय कार है।
इस शुद्धि से प्रेम बढ़ेगा ।
भेद भाव हृदय से कढ़ेगा ॥
शुद्धि शान्ति सुधा की धार है ॥ १ ॥ शुद्धि०
शुद्धि बिछुड़े हुओं से मिलायेगी।
विपरीति को मीत बनायेगी ।
बुद्धिमानों का यही विचार है ॥ २ ॥ शुद्धि०
शुद्धि जाती के दुःख हरेगी ।
गौ माता की रक्षा करेगी ।
इस शुद्धि की महिमा अपार है ॥ ३ ॥ शुद्धि०
शुद्धि जब से है दिल से बिसारी।
तब से बिगड़ी दशा है हमारी।
मचा भारत में हाहाकार है ॥ ४ । शुद्धि०
शुद्धि बिन हमारे भाई ।
बने लाखों यवन ईसाई।
चले गउओं पे निशदिन कुठार है ॥ ५ ॥ शुद्धि०
धन्य है उस ऋषी को माया ।
जिसने शुद्धि का मंत्र बताया ।
किया शुद्धि का फिर से प्रचार है ॥ ६ ॥ शुद्धि०
चक्र शुद्धि का फिर से चला है।
भेद भाव हृदय से टला है ।
छाई शुद्धि की हरसूं बहार ॥ ७ ॥ शुद्धि०
कहें प्रकाश जो सुख चाहो ।
आवो शुद्धि का बीड़ा उठाओ।
वक्त ऐसा न फिर बार बार है ॥ ८ ॥ शुद्धि०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu

रसिया २६

सररर करिगई साफ़ निकर गई वैदिक वीरों की तलवार ॥टेक॥
जैनी कुरानी और किरानी मत थे वे शुम्मार।
सर्व मतों पर चली अकेलो ज़रा न खाई हार ॥१॥
किस्से और कहानी छूटे छूटे सब व्यवहार।
अब मनमानी नहीं कर सकते लंठर कूर गँवार॥२॥
रंडी मुंडी भांड़ भगतुए करते अत्याचार।
पड़ी दुकानें खाली उनकी वेदों का प्रचार ॥३॥
रामकृष्ण सीता और राधा नाचैं नाच विहार।
लौंड़े रूप जनाना धरते सभा रिझावन हार ॥४॥
यह सब हटी कुरीतें मित्रो स्वामी का उपकार।
गंगासहाय बचाया भारत डूबा था मँझधार ॥५॥

भजन २७

भारत माता करे विलाप कहां गये नृपति कर्ण से दानी ॥ टेक ॥
कवित्त—भीषण संग्राम जबकि महाभारत में होने लगा सारा ही शरीर विधा अनगिनत तीर से। भादों में वर्षा ज्यों छलनी से पानी गिरे ऐसे ही रुधिर बहने लगा कर्ण के शरीर से॥ ऐसे कुसमय में कृष्ण और अर्जुन दोनों विप्र रूप धार दान मांगते हैं वीर से। सिसकते हुए समर भूमि में जो दिया उत्तर कर्ण होना न अधीर सुनुलो श्रोता गण धीर से॥
कड़ी—कहने लगे कर्ण समझाय, बोले मेरे घर पर जाय, तुमको वहां दान मिल जाय, हर्गिज़ मने करे ना रानी॥ भारत०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

...main. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवित्त—विप्र ने कहा राजा बात क्यों बनाते हो दान के देने में या तो दे नहीं इनकार कर ॥ निर्बल हूँ बल नहीं बूढ़ा शरीर मेरा मार्ग में सौ बार कहीं बैठूंगा हार कर ॥ आंखों से अंधा कहीं ठोकर ही खाय गिरूं गिरते ही प्राण जाँय ज़रा तो विचार कर ॥ लाख बार कहो नहीं घर कदापि जाऊं दान देना हो तो यही स्वीकार कर ॥

कड़ी—कहते कर्ण दोऊ कर जोड़, मेरे दांतों को लो तोड़ ।
हड्डी इसी जगह दो छोड़, लेलो स्वर्ण ब्राह्मण ज्ञानी ॥ भारत०

कवित्त—विप्र ने कहा राजा ज़रा तो विचार करो दांतों को तुड़वा कर मुझे हत्यारा बनाते हो । ऐसे दानी का हमें दान तो स्वीकार नहीं लीजिये हम जाते हैं क्यों तुम पछताते हो । कर्ण ने कहा आप इतनी तो कृपा करें सामने से पत्थर मुझे दीजे क्यों घबराते हो। अपने ही हाथों से मैं अपने दांत तोड़ूंगा स्वर्ण धरूं भेट प्रभू ख़ाली क्यों जाते हो ।

कड़ी—ब्राह्मण कहता करो विचार, यह भी मुझे नहीं स्वीकार ।
सेवा शूद्रों का अधिकार, सेवा से है मुझे गिलानी ॥भारत०

कवित्त—धन्य २ दानवीर वाणों से छिदे हुये भी धीरे २ राजा कर्ण आगे को सरकने लगे । ज़ख्मों के पीड़ित ऐसे तृण भी न उठे जासे पैरों से पाषाण उठा छाती पर धरने लगे । एक कर से पाषाण और दूसरे से होठ दबा मारने को उद्यत हुए सकल घाव दुखने लगे । तोभी नहीं प्रण छोड़ा दांतों पर पाषाण धरे इधर श्रीकृष्ण इनके भावों को परखने लगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

कड़ी—कृष्ण ने पकड़ लिया झट हाथ, नवाया अर्जुन ने भी माथ
एक यही धर्म चलेगा साथ, निश्चय चन्द्र कवी ने जानी ॥
॥ भारत० ॥

ख्याल २८

धीरज धर मत घबड़ा बहिना तेरा सब कष्ट मिटाऊँगी ।
तेरे सुत के बदले अपना सुत दाने को भेट पठाऊंगो ॥
तेरा प्यारा इकलौता पुत्र राक्षस से मारा जायेगा ।
यह महाकष्ट होगा सुत का तुम से न सहारा जायेगा ॥
हैं पांच पुत्र मेरे योधा गर उनमें एक गया मारा ।
फिर भी तो चार रह जायंगे तेरा सुत इकलौता प्यारा ॥
मत रुदन करे सुत अपने का छाती से लगा समझाती हूँ ।
दाने का भेट मैं जायेगा अभी भीम बली को बुलाती हूँ ॥

दोहा—भली भांति समझाय कर, पर हित चित में धार ।
कुन्ती पहुंची भीम पर, ज़रा न कीनी बार ॥

कवित्त—अरे बेटा भीम बली नित्य इस नगरी से आदमी का भक्षण करने दाना एक आता है । जिसके घर रह कर हम तुमने आनन्द किया इसका रुदन सुनकर जिगर मेरा थर्राता है । इसकी है बारी भीतर जो रो रही है नारी आज भेंट इसकी इकलौता पुत्र जाता है । कहे हरिदत्त बेटा दाने के निकाल प्राण क्यों न इस नगरी को निर्भय बनाता है ।

भजन २६

जाओ पर कारज के हेत बेटा भीम बली बलधारी ॥ टेक ॥
कवित्त—धन्य बेटा जन्म उसका दूसरों के काम आये मरता
और जीता है पराये उपकार में । राम काज हेत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हनूमान सिंधु पार गये रावण मार लंका की विभीषण अधिकार में। मिलते हैं अनेक उदाहरण पूर्व पुरुषों के शिवी ने तन काट दिया कबूतर के प्यार में। मसल है मशहूर दूसरों की भलाई के लिये क्षत्रिय पुत्र प्यारे जन्म धारें संसार में।

कड़ी—बेटा भीम करो ना देर, जाओ लेकर के शमशेर,
मार दाने का करदो ढेर, निर्भय बसे यह नगरी सारी। जाओ०

कवित्त—इतना हुक्म पाते ही पवनपुत्र गरज उठा साथ ले सामान सारा भेट में जाने लगे। अच्छे अच्छे माल आज खाने को मिलेंगे खूब इसी धुन में मस्त दौड़ लंबी लगाने लगे।

कड़ी—इतने में दाना पहुँचा आय, भीम को देख गया चकराय,
बली ने बलकर गदा उठाय, ज़ोरसे सीने पर फटकारी।।
॥ जाओ० ॥

कवित्त—गदा के लगते ही दाना चिंघाड़ उठा दौड़ा मुंह फाड़ बली भीम के चबाने को। समझ गदाधारी ने गदा का प्रहार किया होश नहीं आने दिया एक बार दाने को। मार मार भीम ने ज़मीन पर पछाड़ दिया प्राण बिन निकाले नहीं छोड़ा उस दिवाने को। मरे हुये दाने को नगरी के दर्वाजे पर कर दिया खड़ा तमाम शहर के दिखाने को।

कड़ी—काट कर दाने के नाक और कान,
चल दिये भीम बली बलवान।
कहा माता से इस विधि आन,
लो आशा पूरण भई तुम्हारी॥ जाओ०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

कवित्त—भीम का कर्तव्य देख कुन्ती प्रफुल्लित हुई पीठ ठोक बली भीम छाती से लगाये हैं। प्रातःकाल दाने को नगरी के दर्वाजे पर मुर्दा पड़ा देख लोग शहर के घबड़ाये हैं। अरे ऐसा कौन बली दाने को मार दिया नगरी पर अहसान कर मुर्दे जिलाये हैं। कहें हरिदत्त ऐसे एक क्या सहस्रों ही योधा यहां की भारतीय देवियों ने जाये हैं।

कड़ी—अब होती मुर्दा संतान, जिनमें नहीं देश अभिमान,
तोड़ें जी हुजूर की तान, हरदत्त लगी गुलामी प्यारी। जाओ०

भजन ३०

जयपुर महाराजा की बेटी तथा महाराज बूंदी की स्त्री पति परायण दुर्गादेवी।

वार्ता—जिस समय दुर्गा अपनी छोटी बहिन के विवाह में आई और अलहदा डेरा लगवाकर ठहरी तो छोटी बहिन के ब्याहने वाला राजपूत अमरसिंह ब्याह के पश्चात् दुर्गावती के सौन्दर्य्य का प्रशंसा सुन तम्बू में पहुँचता है। दुर्गा सविनय पूछती है कहिये महाराज कैसे कष्ट किया। अमरसिंह कहता है तनिक आगे बढ़िये?

दोहा—ज्यों ही दुर्गा ने धरे, दोही क़दम अगार।
झपट अमरसिंह ने दिया, हाथ हाथ में मार॥

कवित्त—हाथ का पकड़ना मानो बिजली सी टूट पड़ी गर्ज कर सिंहनी ने खींचली कटार है। नैना विशाल मानो जोड़ दी मशाल क्रोध न संभाल सकी बोली धिक्कार है। अरे दुष्ट पापी दुराचारी नीच ठहर ज़रा मौत तेरी आई कोई क्षण की अबार है। बूंदी की आवरू पतिव्रत धर्म मेरा नष्ट कर हरदत्त जीते रहना दुशवार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—इतने ही में मच गया, महलों में कुहराम।
नर नारी चहुं ओर से, हो गये जमा तमाम ॥१॥
समझाये माने नहीं भवकर हा सब गात।
माता ने झट दौड़ कर, पकड़े दोनों हाथ ॥२॥

ग़ज़ल—कहा मात ने ऐ बेटी ज़रा तो धीर धर मन में।
शान्ती कर जली है क्रोध की अग्नी तेरे तन में ॥
है इसका पाप इस काबिल सजा जी चाहे जितनी दे।
मगर लघु भगनी तेरी रो रही है बैठी महलन में ॥
रहम कर छोड़ दो इसको न मारो इस समय बेटी।
रंडापा दे न प्यारी बहिन को इस बालये पन में ॥
ध्यान उसकी तरफ देना हुई है रात ही शादी।
सभा मंडप के आगे बंध गई है इसके बचपन में ॥
कहा ले मान कर अहसान इसको छोड़ दे बेटी।
खुद ही मर जायगा बँधकर तेरे अहसां के बचन में ॥
सुनकर उपदेश माता का न कुछ भी शान्ती आई।
कहें हरदत्त बोली रुक नहीं सकता अब एक छिन में ॥

बहरे तवील ३२

तेरे कहने से माता इसे छोड़ती,
क्रोध जाता है मुझ से हटाया नहीं।
क्या कसी दुष्ट ने दुष्टता पर कमर,
दंड इसका ज़रा इसने पाया नहीं ॥
अधिक दंड चाहिये था मिलना इसे,
किसी और सती को सतावेगा ये।
अब करूं क्या हूँ परवस कुछ चलता न बस,
हुक्म माता का जाता भुलाया नहीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Tr

मगर हाथ को दुष्ट ने छू लिया,
रहा सेवा के लायक पती की नहीं ।
इतना कह कर खंजर उठाया सितम,
दस्त उड़ाय बिलम्ब लगाया नहीं ॥
जिस्म से हाथ को झट अलग कर दिया नहीं,
कम्पाया दहलाया किंचित हिया ।
दृढ़ताई दिखाई न घबड़ाई वह,
क्षत्रिय वंश कलंकित बनाया नहीं ॥
धन्य दुर्गावती सी कहां है सती,
धर्म समझा पतीव्रत पाई गती ।
पूज्य समझा था केवल सती ने पती,
कभी कबरों को शीश नवाया नहीं ॥
आज भारत की नारी ग़ज़ब क्या करें,
पीर सैयद पै मेवा मिठाई धरें ।
कहें हरदत्त घर में पती से लड़ें,
सच्चा पतिव्रत धर्म कमाया नहीं ॥

ग़ज़ल ३३

कांटे से भी ख़राब है जिस गुल बू न हो ।
वीराने के मिसाल में जिस दिल में तू न हो ॥
गूंगी ज़बां हो जिस पै तेरी गुफ़्तगू न हो ।
जल जाय दिल वह जिसमें तेरी जुस्तजू न हो ॥
जो स्याह दिल सताये किसी बे ज़बान को ।
मालिक के रूबरू वह कभी सुर्ख़रू न हो ॥
दुनियां से हाथ धोके करै बेज़बां पै प्यार ।
हर हाल में है पाक कभी बेवज़ू न हो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्सा है वह जो आप सा जाने जहान को।
तफ़रीक़ जिसके दिल में कभी मैं व तू न हो॥
दुनियां में बसके पाक चलन को बनाइये।
बरबाद जीवका कभी यारो लहू न हो॥
कुछ कर ले काम नेकी कि फ़ुर्सत का वक्त है।
हासिल है आज बात वह कल को कभी न हो॥
खोले हुए जो हाथ जहां से हमारा कूंच।
लिपटी हुई क़फ़न में कोई आर्ज़ू न हो।
मख़मूर है शराबे सुलह कुल का जाम पी।
उस राम के हबीब का ख़ाली सुबू न हो॥

देश में जागृति और विपक्षियों में सनसनी

भजन तर्ज ग्रामीण ३४

है गयौ उदै भान विद्या को जागे भारत के सरदार।
पहिले जागे आर्य्य पिछारी हिन्दू भये होशियार।
सबने मिलकें ढूंढ़ लियो जो बिछुड़ गयो परिवार॥१॥
अल्ला ही अल्ला हो मसज़िद में मुल्ला रहे पुकार।
ऊपर कूं कर हाथ बुलावें उतरौ मेरे यार॥२॥
अर्श हफ्त पर अल्ला ताला सो रहे पांव पसार।
यहां मुख़ालिफ़ तोड़े डालें सब कौमी दीवार॥३॥
बेंड़ी तर्क आर्य्य लोगन की गये मौलवी हार।
पेश न कुछ भी पड़ै हमारे शुद्धी पड़ी पिछार॥४॥
मलिकाने सब ठाकुर हैगये मेवाती मेवार।
घोसी सब अहीर बतलावें सक्का भये कहार॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

काछी कहें कूँजरे भइया तुम क्यों रहे पिछार ।
कछवाहे ठाकुर बन जाओ करवाओ संस्कार ॥६॥
रामचन्द्र कहै सब आपस में करौ प्रेम व्यौहार ।
बहुत दिनन के बिछुड़े भाई मिलि लेउ भुजा पसार ॥७॥

(चित्तौड़ में संग्राम समय की कविता)

वार्ता—जब सब स्त्रियां पुरुषों के से केशरी वस्त्र पहिन कर पतियों के साथ लड़ाई में जाने को तैयार हो गईं, उस समय महाराज रतनसेन इत्यादि ने समझाया कि यह हम जानते हैं कि तुम ज़रूर दुश्मनों को नीचा दिखाओगी परन्तु बादशाह बड़ा अत्याचारी है कहीं एक भी हिन्दू स्त्री पकड़ी गई तो हमारी बात बिगड़ जायगी, तब स्त्रियों ने कहा, आप हमें चिता चिनवा दें हम अपने धर्म को लेकर आग में जल जायेंगी फिर आप बेखटके लड़िये । बस चिता तैयार हुई और हज़ारों स्त्रियां चिता में बैठीं ।

गाना ३५

चिता चिन के करी तैयार लगी न देरी देरी देरी ।
क्षत्राणियों के बच्चे वाले, जो कर करके प्यार से पाले ॥
यों मुख से शब्द निकाले, हा मातु मेरी मेरी मेरी ॥१॥ लगी०
बेटा आओ हम तुम संग जल जावें, अपना क्षत्री धर्म बचावें ।
हम सबके सब एक जामें बनावें, खाक ढेरी ढेरी ढेरी ॥२॥ लगी०
पद तेजसिंह ने गाया, सब बच्चों ने ऐसे फ़र्माया ।
आज ईश्वर ने हमको बिसारा, नज़र फेरी फेरी फेरी ॥१॥ लगी०

दोहा—बच्चे थे राजपूत के, छोटा मुँह बड़ी बात ।
मातु वचन सुन तड़क कर, सो बोले इक बात ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वार्ता—तब बच्चों ने कहा, ऐ माता ऐसा कहां लिखा है कि राजपूतों के लड़के जल कर मरें अगर लिखा हो तो हम को भी बेशक जलाइये वर्ना जो धर्म है वही करेंगे ।

तब माताओं ने कहा, बेटा धर्म तो है लड़ने का सो मेरे पुत्र तेरा कच्चा अंग कोमल कलाई है अभी शमशीर भी न उठाई है।

भजन ३६

लड़ने को चलेंगी संग में ला दो शमशीर दुधारा ॥टेक॥
संग में पती हम आपके चल कर लड़ेंगी शत्रुओं से बल करके,
हरगिज़ नहीं आवें टल करके, मान करेंगी भंग हम ।
जो दुशमन होगा तुम्हारा ॥ १ ॥ लादो०
आखिर तो हम क्षत्राणी हैं, हिम्मत में क्या लाशानी हैं,
ऐसी ताक़त जिसमानी है, चाहें सारे अंग में ।
चलै अंगुल अंगुल पर आरा ॥ २ ॥ लादो०
हरगिज़ नहीं धर्म हारेंगी, मान शत्रुओं के मारेंगी,
बाना वीरता का धारेंगी, चल कर उस रण रंग में ।
देखो पुरुषार्थ हमारा ॥३॥ लादो०
शत्रु हिम्मत देख हमारी, वह प्रशंसा करें तुम्हारी,
अहो धन्य ऐसी क्षत्राणी, जो आईं इस जंग में ।
पद तेज़सिंह ने गाया ॥४॥ लादो०

भजन ३६

दुशमन को शमशीर हमारी का स्वाद ज़रा चखा दो ॥ टेक ॥
हम तुम्हारे साथ चलेंगी, दुशमन की राख करेंगी ।
आगे को ज़रा बढ़ने दो ॥ १ ॥ दुशमन०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

हम सुख दुःख में देवें सहारा, पतिव्रत है धर्म हमारा,
वो धर्म हमें रखने दो ॥ २ ॥ दुशमन०

उत्तर बच्चों का मा से ३७

यह अंग अधम दिन चार का हम नहीं धर्म हारेंगे ।
वस्त्र केसरी हमें पिहनादो-कटि में तेज तलवार गहादो।
तेज अश्व पर हमें चढ़ादो-चल कर उस रण रंग में ।
दुशमनों को संहारेंगे ॥१॥ हम नहीं०
मात हमारी क्षत्राणी है जिस की कोख में यह देह धारी ।
कैसे रण से हटें पिछारी ले तीक्ष्ण तलवार को खुद ।
मरेंगे या मारेंगे ॥२॥ हम नहीं०
एक दिन तो जरूर मरना है फिर मरने से क्या डरना है।
तेजसिंह आखिर लड़ना है जल कर मरना धिरकार है ।
जो धर्म है वही करेंगे ॥३॥ हम नहीं०

स्वदेश महिमा ३८

तिलक यह तीन लोकों का भुवन भूषण बताते हैं ।
यही प्रिय देश है मेरा इसी के गीत गाते हैं ॥
कहीं सह्याद्रि शोभा है कहीं है अर्वली अवली ।
कहीं पर नील गिरि अपनी छटा अनुपम दिखाते हैं ॥
बना यह ताज वसुधा का कुतब मीनार अलबेली ।
गुफा लखकर अजन्ता की पथिक बन चित्र जाते हैं ॥
कहीं पर रायसीना सा खिचत नूतन नगीना है।
कहीं कश्मीर कानन है जिसे नन्दन बताते हैं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसे सुर गाय मैं समझूं कि समझूं कल्प तरु अपना।
इसी अक्षय खज़ाने से अनोखे रत्न पाते हैं॥
न ऐसा देश दुनियां में कि जैसा देशविभु मेरा।
जिसे लख देश दाँतों के तले अगुली दबाते हैं॥

तरानए वतन ३९

हिम्मत करो नौजवानो कि आज़ाद वतन हो।
उफ़ आप के होते हुये बर्बाद वतन हो॥ १॥
अफ़सोस अहले दर्द में उल्फत की बू न हो।
नफरत का दौर दौरा हो नाशाद वतन हो॥ २॥
कोठी भरी है माल से बाजार पटे हैं।
पर क्या मजाल एक भी ईजार वतन हो॥ ३॥
गांधी के उसूलों में हो खद्दर की इशाअत।
इफलास मिटे क़ौम का इम्दाद वतन हो॥ ४॥
दुशमन की क्या मज़ाल ज़रा आंख उठाये।
तुम भीम बनो और यह फौलाद वतन हो॥ ५॥
जैतन शहीदे क़ौम के मरक़द की सदा है।
तुम क़ौम की तामीर में बुनियाद वतन हो॥ ६॥
गुलचीं के दस्ते बुर्द से बरबाद चमन हो।
खूने ज़िगर से सींच लो आबाद वतन हो॥ ७॥
बुल बुल की तरह गुल की मुहब्बत में जान दो।
इक बिरद जुबा देश हो फ़र्य्याद वतन हो॥ ८॥
अहले नज़र के वास्ते गर शीरी वतन हो।
जतेन्द्रनाथ दास का तौहीद वतन हो॥ ९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

वीर केशरी शिवाजी ४०

माता के सिवाये पुत्र पूरण विद्वान होत।
मात के सिखा ये पुत्र कायर और कूर हैं॥
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाये सुत सपूत और शूर हैं॥
माता के सिखाये फंसे अष्ठादश व्यसनन में।
माता के सिखाये सारे अवगुणों से दूर हैं॥
कहें तेजसिंह इसमें माता ही है मुख्य कारण।
इस लिये पुत्रियों को पढ़ाना ज़रूर है॥

कवित्त ४१

एक रोज़ माता शिव की चढ़ी अपने महलों पर।
बुर्ज़ किते सिंहगढ़ का चमका कंगूरा है॥
देखते ही जोश आया पुत्र को बुलाया तभी।
कहने लगी पुत्र तेरा राज्य सब अधूरा है॥
होगा तू अजीत कोई जीत नहीं सके तुझको।
उसी रोज जानूंगी मैं राज्य तेरा पूरा है॥
किले सिंहगढ़ को शमशेर गहो शेर मेरे।
फतेह करो जाकर करो दुश्मन का चूरा है॥

दोहा

क्या तुमको मालूम नहीं शिवाजी का हाल।
सारे माता के भरे थे मज़बूत ख्याल॥
सिंहगढ़ फ़ते करो बेटा, तभी पूरा हो राज तुम्हारा।
अपनी शमशेर उठाओ, मत पल भर की देर लगाओ॥
खुशखबरी फतेह की लाओ यतन ऐसे से लड़ो बेटा।
वीरों के साथ लड़ने का खुद यह काम तेरे करने का॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहिं इसमें काम डरने का फेर क्यों दुखड़ा भरो बेटा ॥२॥
किला कबजे में जब लाओगे तभी अटल राज्य पाओगे।
दुशमनों से बच जाओगे फेर नहिं दुखड़ा भरो बेटा ॥३॥
जो तू मेरा कोख का जाया फिर क्यों तेर इतनो लाया।
पद तेजसिंह ने गाया कदम रण में को धरो बेटा ॥४॥

भजन होली ४२

दोहा—कैसी होली पूर्व थी, कैसी होवे आज।
पूछो तो मालूम नहीं, है प्राचीन रिवाज॥

टेक—न ऐसीखेलनाजी होली हरगिज भारतवासी।
पितामहा जो ऋषी मुनी थे, करते हवन चित लाई।
हवन के बदले आज मित्र, कूड़े में आग लगाई ॥१॥
दूजे दिन होली के बाद में, धूल का दिन ठहरावो।
नहीं उसूल मालूम तुम्हें कुछ, लौंडे भांड़ नचावो ॥२॥
पहिले ऋषिमुनि सब जुरमिल कर करते थे सृष्टि विचार।
सालाना के बुरे कर्मों पर, देते धूलि सब डार।३॥
उसी धूलि के बदले आज तुम, खुद ही धूलि उड़ावो।
केशर चंदन शुद्ध वस्तु तजि, मुख से कीच लगावो ॥४॥
काले मुंह करदो जूतों के, हार गले पहनावो।
होली का भड़ुआ कह करके, गलियों में ले जावो ॥५॥
गोदुग्ध मिष्टान मिला कर, पीते थे उत्तम प्याले।
जिसके बदले आज यहां, पीओ शराब मतवाले ॥६॥
वैदिक रीति धर्म को तज कर, होली नई बनाते।
दिल में करें न ख्याल जरा भी, आखिर मनुष्य कहाते ॥७॥
सुनो मित्र धरि ध्यान करो, यह सकल कुरीति बंद।
वैदिक रीति से हवन करो, कहें रामचन्द्र यों छन्द ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust

भजन ४३

दिवाली

शैर—देखिये मित्रो दिवाली आज कैसी हो रही।
मस्त सारी रात भर जूए में दुनिया हो रही॥
खेलते जवारी जुआ में बेंच देते हैं मकान।
लक्ष्मी पूजा के दिन ऐसी दुर्गति हो रही॥

टेक—जरा तो सोचना जी कैसी होवे निराली दिवाली।
पितामहा जो बड़े तुम्हारे, जिन की हो सन्तान।
उनके नियम उसूलों पर तुम्हें, धरना चाहिये ध्यान॥ १॥
वर्षा विगत बदलना ऋतु का, पड़ती थी जब ठंड।
नये अन्न अरु वस्त्र दान करने के थे सब घर फंड॥ २॥
आज के दिन करते हिसाब सब, धर्मदान क्या हुआ।
जिसकी एवज आप खेलते फिरते, घर घर जूआ॥ ३॥
गोवर्धन दिन था शुमार का, कितने गौ और बैल।
देते उन सब को इनाम जो करते पशू की टैल॥ ४॥
फिर दुतिया के दिवस जो कन्या सावन में आती थी।
भ्राता से मिल भोजन करती सुसरे गृह जाती थी॥ ५॥
यथा पूर्व नियम ऋषियों का दीया मित्र बतलाय।
रामचन्द्र कहैं पूर्व रीति सब दई भजन में गाय॥ ६॥

भजन प्रभाती ४४

प्रभू मेरे अवगुण चित न धरो।
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक पड़ो॥१॥
पारस भेद कोई नहिं जाने छुअतहि कनक भयो॥२॥
एक नाला एक नदी बहत है गन्दो नीर भरो॥३॥
सब मिल कर जब एक वरन भये गंगा नाम परो॥४॥
नाथ मेरे अवगुण चित न धरो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओ३म् जय जगदीश हरे।

भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का ॥२॥
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥२॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किस की ॥२॥
तुम विन और न कोई, आश करूँ जिसकी ॥२॥
तुम पूरण परमातम, तुम अन्तर्यामी ॥२॥
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥२॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥२॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥२॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपती ॥२॥
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती ॥२॥
दीनबन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे ॥२॥
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥२॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥२॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥२॥
ओ३म् जय जगदीश हरे पिताजी जय जगदीश हरे ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनम्र निवेदन

परम पिता परमेश्वर की पावन दया से अपने
हुए भजनों की छोटी सी भेंट अर्थात् 'श
भजनमाला का चतुर्थ भाग' मुझे अपनी संगीतप्रि
और भाइयों के सम्मुख रखने का पुनः सौभाग्य प्राप्त
मेरा यह संग्रह कैसा है इसका निर्णय तो पुस्तक प
प्रेमी पाठक ही करेंगे पर, इतना मैं अवश्य निवेद
कि अब की बार इस संग्रह में सामाजिक भजनों के अतिरिक्त
मैंने राष्ट्रीय भजनों को भी पर्याप्त संख्या में सम्मिलित कर
दिया है और वह इसलिये कि उन्हें पढ़कर सामाजिक सुधार के
साथ साथ देशोद्धार की लगन भी मेरी प्यारी बहिनों के दिल
में बैठ सके क्योंकि पुरुषों के साथ साथ स्वाधीनता के
संग्राम में लड़ कर उन्हें भी देश का ऋण चुकाना है। आशा
है 'भजन माला' के पहिले तीनों भागों को भाँति कृपालु पाठक
और पाठिकायें चतुर्थ भाग को भी अपनाकर मुझे
कृतार्थ करेंगे।

× × × ×

'शान्ति संग्रह भजनमाला' के पहिले, दूसरे और तीसरे
भागों का प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका है और इन भागों के
लिए अनेक मांगें आई हुई पड़ी हैं फलतः अपने प्रेमी ग्राहकों
के अनुरोध से उक्त तीनों भागों का दूसरा संस्करण मैंने
निकलवाने का विचार किया है जो सम्भवतः शीघ्र ही छप कर
प्रकाशित हो जायेगा। इतिशम्

प्रार्थी:—

शान्तिदेवी आर्योपदेशिका,

स्थान—लुहारगली आगरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi